P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-11* July- 2019
Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika

केदारेश्वर मंदिर के मूर्तिशिल्पों का ऐतिहासिक वर्णन

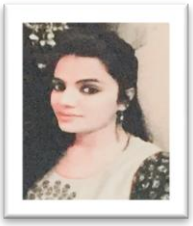

सोनाली गुप्ता
शोधार्थिनी,
चित्रकला विभाग,
दयालबाग एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट,
दयालबाग, आगरा, भारत

सारांश

हलेविद् गाँव का केदारेश्वर मंदिर लिया जो कि लगभग 11वीं से 12वीं ई. के बीच होयसल नरेशों द्वारा बनवाया माना जाता है। अलंकरण की दृष्टि से होयसल कालीन मंदिरों में केदारेश्वर मंदिर एक उत्कृष्ट रचना है। मंदिर की अलंकरण पद्धति उच्च कोटि की है, इनकी कृतियां भारत का गौरव बढ़ाने वाली है। जो कलात्मक दृष्टि से संसार के विभिन्न मंदिरों में महत्वपूर्ण स्थान रखती है।

कर्नाटक क्षेत्र में होयसल वंश के राजाओं ने अनेक मंदिरों का निर्माण कराया जिसमें होयसलों द्वारा बनवाये गये मंदिरों में बेलूर का ''चन्नकेश्वर मंदिर'', हेलविद् का ''होयलेश्वर मंदिर'', सोमनाथपुर का ''केशव मंदिर'' तथा हलविदू का ''केदारेश्वर मंदिर'' प्रसिद्ध चार मंदिरों में से एक केदारेश्वर मंदिर भी है। जिसमें अनेकों मूर्तिशिल्पों का निर्माण हुआ जो हिन्दू धर्म पर आधारित देवी देवताओं की प्रतिमा हाई रिलीफ में उत्कीर्ण हैं। बनवायी गयी प्रतिमाओं में सेलखड़ी पत्थर (सैण्ड स्टोन) का प्रयोग किया गया है। प्रतिमाओं में प्रतीक चिन्हों को भी दर्षाया गया है तथा अधिष्ठानों पर एक के ऊपर एक क्रमशः गजों, व्याघ्रों, पुष्पालंकरणों, अश्वाथकों, मकर, हंस, गजारूण आकृतियां और अलंकारिक सज्जा से संबंधित पंक्तियां बनी हैं जो शक्ति, गति, ऊर्जा और प्रकृति प्रेम की मूर्त अभिव्यक्ति है। होयसल कालीन मंदिरों के सर्वेक्षण से यह पता चलता है कि यद्यपि यह मंदिर द्रविड़ शैली से प्रभावित है। किन्तु मंदिर के शिल्पियों ने पृथक रूप से ही इनका वास्तु विधान किया है। यथार्थ तथा वास्तुकला से इसका कोई सम्बन्ध नहीं है। अपनी कल्पनाओं को मूर्त रूप देने के लिए इन शिल्पियों ने दक्षिण की विभिन्न कलाओं का आश्रय लिया।

होयसल कालीन केदारेश्वर मंदिर भारतीय मूर्तिकला तथा वास्तुकला की अनुपम देन है। यह होयसल नरेशों की अद्वितीय रचना है। इसकी अलंकरण सम्पदा अपरिमित है। 700 फुट की अटूट श्रंखला तक अलंकरण की परम्परा इस मंदिर की विशेषता है। इसका अंग–भंग ललित मूर्तियों से अलंकृत है। यह मूर्तियाँ अति सुरूची पूर्ण एवं आकर्षक हैं। अभिनवसम्पदा वाली इन मूर्तियों की अंग भंगिमाओं में उत्कृष्टता देखी जाती है तथा शिल्पी की कल्पना मौलिक एवं विशाल चिन्तन शक्ति से सम्पन्न है। इस युग का वैभव इस कृति में मूर्तिमान हो उठा है। हलेविद् का केदारेश्वर मंदिर नयनाभिराम है।

मुख्य शब्द : होयसल, केदारेश्वर, मूर्तिकला, मंदिर, कर्नाटक।

प्रस्तावना

भारतीय मूर्तिकला के इतिहास में अनेक गौरवशाली पन्ने हैं। उन्हीं में से एक होयसल काल में स्थापित कर्नाटक का केदारेश्वर मंदिर स्वर्णांकित है। यह मंदिर कर्नाटक के ''हलविदू'' नामक गाँव के ''हसन'' जिले के अंतर्गत आता है। केदारेश्वर मंदिर को हायसल काल के राजा वीरा बल्ला द्वितीय ने अपनी रानी केतला देवी के लिए सन् 1173–1228 ई. के अंतर्गत बनवाया था। सौन्दर्यपूर्ण कलात्मक स्वरूप लिए इस मंदिर की वास्तु, स्थापत्य व मूर्तिकला एक उत्कृष्ट कहानी कहती है। अलंकरण की दृष्टि से होयसल कालीन मंदिरों में केदारेश्वर मंदिर एक उत्कृष्ट रचना है। इसका निर्माण संभवतः राज परिवार के पूजन हेतु किया गया था क्योंकि यह राजभवन से एक मार्ग द्वारा जुड़ा हुआ था। मंदिर की अलंकरण पद्धति उच्च कोटि की है, इनकी कृतियां भारत का गौरव बढ़ाने वाली है।

विभिन्न आकार, प्रकार एवं कलात्मक गुणों से युक्त इस मंदिर के मूर्तिशिल्पों का अध्ययन अवश्य ही कला के नये आयाम स्थापित करेगा जो शोधार्थीयों और इस विषय से संबंध रखने वालों के लिए भविष्य में लाभप्रद होगा।

अध्ययन का उद्देश्य

एक शोधकर्ता को अपना शोध प्रारम्भ करने से पूर्व अपने निर्धारित उद्देश्य का सर्वप्रथम ज्ञान होना चाहिए कि वह किस उद्देश्य से शोध कर रहा

है। किसी भी शोध का कार्य एक महत्वपूर्ण तथ्य की खोज करना है चाहे वह प्रयोगात्मक हो या सैद्धांतिक। चित्रकला एक प्रयोगात्मक विषय है जिसमें प्रयोग के द्वारा ही उसके सैद्धांतिक पक्ष पर ध्यान देते हुए तथ्य की गहराई तक पहुँचते हैं। केदारेश्वर मंदिर की मूर्तिकला का भारतीय कला में योगदान को बताना भी मेरा उद्देश्य रहेगा। मंदिर का ऐतिहासिक एवं धार्मिक महत्व को बताना भी प्रमुख उद्देश्य होगा। होयसल कालीन केदारेश्वर मंदिर के मूर्तिशिल्पों को सौंदर्यात्मक व अलंकृत अध्ययन करना ही मेरे शोध का मुख्य उद्देश्य है जो भविष्य में विद्यार्थियों एवं शोधार्थियों के लिए महत्वपूर्ण सिद्ध होगा।

साहित्यावलोकन

मैंने अपने शोध को तर्कपूर्ण तथा महत्वपूर्ण बनाने के लिए कुछ साहित्यों का अध्ययन किया जैसे– गिर्राज किशोर के द्वारा रचित ''शिल्प दर्शन'' जिसमें मैंने मूर्तिशिल्प के इतिहास के बारे में ज्ञान प्राप्त किया। इसके अतिरिक्त मैंने शशि झां द्वारा रचित ''भारतीय चित्रकला एवं मूर्तिकला में नारी स्वरूप'' नामक पुस्तक से मैंने प्राचीन भारतीय मूर्तिकला में नारी स्वरूप को समझा व उसका अध्ययन किया। इसके साथ ही मैनें Introduction to Modern Indian Sculpture by Jaya Appasany में आधुनिक भारतीय मूर्तिशिल्प को समझा व सम्बन्धित ज्ञान प्राप्त किया। इसके अतिरिक्त मैंने Sculptural Traditions of Rajasthan by Neelima Vashishtha, वासुदेव शरण अग्रवाल द्वारा लिखित भारतीय कला, Temples of South India by K.R. Shrinivasan आदि पुस्तकों का अध्ययन किया। इसके अतिरिक्त विभिन्न वेबसाइट का भी अवलोकन किया, इसके अध्ययन से मुझे शोध विषय से सरल वर्गीकरण करने के साथ ही इसे पूर्ण करने में सफलता प्राप्त होगी।

संसार में मूर्तिकला जितना शक्तिशाली रहा है उतना अन्य कोई माध्यम नहीं रहा है। भारत के अधिकांश निवासी मूर्तिपूजक हैं। ललित कलाओं में मूर्तिकला का एक विशिष्ट स्थान है। भारतीय कला भारत वर्ष के विचार, धर्म, दर्शन एवं तत्व ज्ञान का दर्पण है। भारत कला की सामग्री वैसे ही समृद्ध है जैसे भारतीय साहित्य। धर्म और दर्शन की भारतीय कला के वातावरण द्वारा हमें यहां के मूर्तियों तथा चित्रों के खिलौनों को साक्षात् दर्शन प्राप्त कर सकते हैं और उनमें छुपी हुई मानसिक कल्पना से भी परिचित हो सकते हैं।[1] वेद एवं ब्राह्मण ग्रंथों में शिल्पकला का सुंदर वर्णन मिलता है। शिल्पकला परम्परागत रूप से वैदिक शिल्पियों से विकसित हुई। विकास के फलस्वरूप यह मूर्तिकला के रूप में अभिहित हुई, मूर्तियों को सुंदर रूप प्रदान किया जाने लगा और वह कलात्मक रूप से विख्यात हो गई।

भारतीय मूर्तिकला की अलग ही विशेषता रही है जो विश्व की कलाकृतियों में देखने को नहीं मिलती। किन्तु सूक्ष्मतापूर्वक अवलोकन करने से यह स्पष्ट हो जाता है कि यह परम्परा मात्र देवी–देवताओं की मूर्तियों के निर्माण में रही है। देवी–देवताओं की विविध मुद्राओं, आयुधों, चिन्हों और प्रतीकों का वर्णन हुआ है जिनका प्रदर्शन कला के अंतर्गत आवश्यक था लेकिन प्रस्तुती करने में कलाकार स्वतंत्र था।[2] अतः परम्परा प्रधान होते हुए भी भारतीय मूर्तिकला अपने विभिन्न कालों में स्वतंत्र रही है और कलाकार कभी परतंत्र नहीं रहा है। मंदिर को बनाने के लिए कई प्रकार की सामग्रीयों का उपयोग किया जाता है। पत्थर, ईंट, लकड़ी का प्रयोग और मिट्टी का उपयोग निर्माण के रूप में होता है लेकिन प्राचीन ग्रंथों में इस बात का संदर्भ मिलता है कि मंदिर अधिक से अधिक दृढ़ बनाया जाना चाहिए जिसके लिए पत्थर के मंदिर का निर्माण करना अन्य मंदिर से दस हजार पुण्यकारी है। यह मजबूती इस बात का प्रतीक है कि जितने अधिक दिनों तक मंदिर का अस्तित्व बना रहेगा, धर्म उतने ही दिनों तक दृढ़ और स्थिर रहेगा। इसीलिए वर्षों पुराने बनाये गये मंदिर हमें आज भी देखने को मिलते हैं। इस प्रकार मूर्तियां व मंदिर दोनों ही परस्पर साथ–साथ चलते आ रहे हैं क्योंकि मूर्तियों का मंदिर या स्तूप आदि जैसे धार्मिक स्थलों पर ही धर्म स्थापित किया जाता है। भारतीय मूर्तिकला के इतिहास में अनेक गौरवशाली पन्ने हैं। उन्हीं में से एक होयसल काल में स्थापित कर्नाटक का केदारेश्वर मंदिर स्वर्णांकित है। यह मंदिर कर्नाटक के ''हलविदू'' नामक गाँव के ''हसन'' जिले के अंतर्गत आता है।

केदारेश्वर मंदिर को होयसल काल के राजा वीरा बल्ला द्वितीय ने अपनी रानी केतला देवी के लिए सन् 1173–1228 ई. के अंतर्गत सेलखड़ी पत्थर (सोप स्टोन) से बनवाया था। सौन्दर्यपूर्ण कलात्मक स्वरूप लिए इस मंदिर की वास्तु, स्थापत्य व मूर्तिकला एक उत्कृष्ट कहानी कहती है। अलंकरण की दृष्टि से होयसल कालीन मंदिरों में केदारेश्वर मंदिर एक उत्कृष्ट रचना है। इसका निर्माण संभवतः राज परिवार के पूजन हेतु किया गया था, क्योंकि यह राजभवन से एक मार्ग द्वारा जुड़ा हुआ था।

मंदिर की अलंकरण पद्धति उच्च कोटि की है, इनकी कृतियां भारत का गौरव बढ़ाने वाली है। जो कलात्मक दृष्टि से संसार के विभिन्न मंदिरों में महत्वपूर्ण स्थान रखती है।

चित्र संख्या 01– केदारेश्वर मंदिर के सामने का दृश्य

चित्र संख्या 02–बाहरी भित्ति पर बनी देवी देवताओं की मूर्तियां

यह मंदिर मूर्तिकला का उत्कृष्ट नमूना है। केदारेश्वर मंदिर के शिल्प बहुत ही बारीकी से उत्कीर्ण है और यह पूर्ण मंदिर भगवान विष्णु और उनके विभिन्न अवतारों को समर्पित है। इनके अतिरिक्त हमें इसमें भगवान ब्रह्मा, शिव आदि के अवतारों तथा उनके वाहनों को मंदिर की बाहरी भित्तियों पर उकेरा गया है।[3] केदारेश्वर मंदिर वास्तुकला का अत्यंत उल्लेखनीय नमूना है जो लगभग 11वीं–13वीं शताब्दी का माना जाता है। होयसल नरेश प्रथम के समय लोक निर्माण विभाग के मुख्य अधिकारी केतमल की देख–रेख में शिल्पकार केदरोज ने इस मंदिर का शानदार नक्शा बनवाया तथा इसका निर्माण भी कराया कहा जाता है कि सौ वर्षों तक इसका निर्माण चलता रहा। यह मंदिर दोरहा है व शिखर रहित है। मंदिर की भित्तियों पर चर्तुदिक आठ लम्बी पंक्तियों में मूर्तिकारी की गई है। जो कि इस मंदिर को अद्वितीय पहचान दिलाती है।

यह मंदिर द्रविड़ शैली के अंतर्गत इसलिए आता है क्योंकि इसके शीर्ष व छतें प्रायः गजपृष्ठाकृत होती हैं। इनके विमान अधिक ऊँचे तथा बहुभौमिक गगनचुंबी गोपुरों से अलंकृत होते हैं।

एक समय था जब केदारेश्वर मंदिर की विशाल गगनचुंबी अट्टालिकाओं से यह नगर सुशोभित था जहाँ मंदिर के घण्टों की ध्वनि से सारा वातावरण आनन्दित होता था परन्तु अब वहाँ घास–फूस से ढके मिट्टी के टीले मात्र ही दिखाई पड़ते हैं। परन्तु वहाँ के लोगों की धार्मिक आस्था के फलस्वरूप हलेविद् का केदारेश्वर मंदिर आज भी जीवित है तथा शालीनता के साथ खड़ा प्रकृति को चुनौती दे रहा है। मंदिर की बाहरी दीवारों पर उत्कीर्ण असंख्य मूर्तियों के कारण यह मंदिर विश्व का सबसे अद्भुत स्मारक तथा मूर्तियों के रूप में प्रकट धार्मिक विचार का अद्वितीय भण्डार बन जाता है।

चित्र संख्या 03–गजासुर मूर्ति 11वीं–12वीं ई.

यह पूरा मंदिर षटकोणिय आकार में बहुत सुंदरता से बना है। पूरे मंदिर में भगवान विष्णु, शिव, ब्रह्म, देवी लक्ष्मी, सरस्वती, महिषासुर, कृष्ण, अर्जुन, गणेश आदि देवी–देवताओं को बहुत बारीकी के साथ मंदिर की भित्तियों पर उकेरा गया है।[4] इसी के साथ ही देवी–देवताओं के विभिन्न प्रकार के वाहनों तथा उनके हाथों में पकड़े हुए विभिन्न प्रकार के अस्त्र–शस्त्र दिखाये गए हैं तथा हाथों की विभिन्न मुद्राओं को भी उत्कृष्टता से उत्कीर्ण किया गया है जो श्रृंगारिकता का अद्वितीय उदाहरण है।

चित्र संख्या 04–कर्नाटक मंदिर की भित्तियों पर मूर्तिशिल्प

केदारेश्वर मंदिर की मूर्तिकला का भारतीय कला में बहुत महत्वपूर्ण योगदान हैं। होयसल कालीन केदारेश्वर मंदिर के मूर्तिशिल्पों को सौंदर्यात्मक व अलंकृत अध्ययन करना बहुत कठिन है, क्योंकि यह मूर्तिशिल्प हमें असंख्य मात्रा प्राप्त होती है।

केदारेश्वर मंदिर में विष्णु की सर्वाधिक मूर्तियां प्राप्त हैं जिनमें एकल विष्णु, गरूण पर आरूण, लक्ष्मी नारायण तथा विष्णु के अवतार स्वरूपों जैसे नरसिंह, वामन, त्रिविक्रम, वराह और अन्य स्वरूपों में वेणुवादन, कालिया दमन, तथा गजेन्द्र मोक्ष और गोवर्धनधारी मूर्तियों के सर्वाधिक उदाहरण हैं।

चित्र संख्या 05– मंदिर की गजसृश्ताकृत शीर्ष

चित्र संख्या 06– बाहरी भित्ति पर बनी असंख्य मूर्तियां

शिव के विभिन्न रूपों में रावणानुग्रह, गजजातक, नटराज, त्रिपुरान्तक आदि रूपों में मूर्तियां मिलती हैं। इनके अतिरिक्त वीणा धारणी सरस्वती एवं गणेश की एकल मूर्तियां, नृत्यार्थ सरस्वती की मूर्ति में दाहिना पैर नृय की मुद्रा में ऊपर उठा है तथा ऊपर के दोनों हाथ नटराज मूर्तियों के समान नृत्य की मुद्रा में है। सरस्वती के दोनों हाथों में अक्ष माला और पुस्तक है। देवी के चरणों के पास हंस वाहन तथा दोनों पार्श्वों में नगाड़ा तथा मंजीरा वादकों की वाद–वादन करती आकृतियां,

सरस्वती के नृत्य की लयात्मकता के अनुरूप तरंगमय दिखाई गई हैं।

यहां गोवर्धनधारी स्वरूपों में सर्वाधिक मूर्तियां मिलती हैं। गोवर्धनधारी कृष्ण की मूर्ति के अत्यंत विस्तार और कल्पनाशीलता के साथ कलाकार ने कृष्ण को गोवर्धन पर्वत उठाए दर्शाया है। नरसिंह और नृत्यरत सरस्वती और गरूण पर आरूढ़ लक्ष्मी नारायण तथा रावणानुग्रह स्वरूप की मूर्तियां विशेष उल्लेखनीय हैं।

कलाकार ने इनमें विशेष कलात्मक प्रतिभा और दृष्टि से कार्य किया है। उदाहरण के लिए लक्ष्मीनारायण मूर्ति में कलाकार ने विष्णु और लक्ष्मी के मूर्ति में विष्णु की आकृति को बड़ा दिखाया है। हलेविद् के इस मंदिर में नरेश, भैरव, चंडेश्वर शिव, पारीजात वृक्ष के लिए कृष्ण और इन्द्र के बीच हुए युद्ध,गणेश, ब्रह्मा, उमा, महेश्वर, गजासुरसंहार, कल्याण सुंदर, महिषामर्दिनी, नरसिंह, वामन, लक्ष्मी नारायण एवं सरस्वती है।

चित्र संख्या 07 मृत्युशैया पर भीष्म पितामह 11वीं–12वीं ई.

रामायण से संबंधित दृष्यों में सीताहरण, रावण–जटायु युद्ध, बाली–सुग्रीव युद्ध, बाली वध, अशोक वाटिका में सीता, राम–रावण का युद्ध, विभीषण का अभिषेक आदि मुख्य हैं।

महाभारत से सम्बन्धित दृष्यों में कृष्ण जन्म, वसुदेव द्वारा कृष्ण को यमुना पार कर गोकुल ले जाना, पूतना वध, बकासुर वध, गोवर्धन पूजा, द्रोपदी स्वयंवर में अर्जुन के मीन नेत्र भेदना, चीरहरण तथा महाभारत के युद्ध से संबंधित विभिन्न दृश्य अंकित हैं।

चित्र संख्या 08– अंग–भंग ललित मूर्तियों से अलंकृत भित्ति

मंदिर पर प्रभुत देवी मूर्तियों के साथ ही शासकों व सामान्य जन जीवन से संबंधित दृश्यों में युद्ध, आखेट एवं मल्ल युद्ध के विस्तृत अंकन मिलते हैं। युद्ध दृश्यों में गज एवं अश्वों की पंक्तियों, युद्धरत आकृतियों तथा युद्ध में प्रयुकत होने वाले अस्त्र–शस्त्रों के अध्ययन से तत्कालीन युद्ध से संबंधित जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

चित्ताकर्षक मोहिनी मूर्तियों को भी सामान्यतः पारम्परिक शैली के दर्पण देखते, नृत्य के पश्चात् तनिक विश्राम करते, वीणा के तारों को सुरमय करते, स्नान के बाद आभूषण पहनते, मंजिरा बजाते या नाग वीणा लेकर नृत्य करते हुए दिखाया गया है।

इन मूर्तियों में तत्कालीन धार्मिक एवं सामाजिक जीवन पर पूरी तरह प्रकट हुआ है। वस्तुतः होयसल कलाकारों ने समाज में जो कुछ देखा उसे विस्तार के साथ मूर्तियों में अभिव्यक्त किया है। का निर्माण हुआ जो हिन्दू धर्म पर आधारित देवी देवताओं की प्रतिमा हाई रिलीफ में उत्कीर्ण हैं। बनवायी गयी प्रतिमाओं में बलुआ पत्थर (सैण्ड स्टोन) का प्रयोग किया गया है।

कर्नाटक का ''काष्ठ शिल्प'', ''गजदन्त की नक्काशी'', ''बीदरी कला'' तथा ''स्वर्ण शिल्प'' आज भी जीवित हैं। केदारेश्वर मंदिर में यह सभी शिल्प जैसे एकाकार हो गये हैं। इन मूर्तियों को इस प्रकार वस्त्राभूषण से सुसज्जित किया गया है मानो सोने–चाँदी के कीमती मोती–माणक जड़े हुए हैं।

चित्र संख्या 09– भित्ति पर देव, अप्सराओं आदि की आकृतियाँ

चित्र संख्या 10– पट्टिकाओं पर अनुपम सौंदर्य

चित्र संख्या 11– समुद्र मंथन 11वीं–12वीं ई.

ऐसा प्रतीत होता है कि होयसल कालीन शिल्पी वास्तु से अधिक मूर्तिकला के जाता थे। उनके अनुभव के आधार पर उस क्षेत्र में एक नई शैली का प्रादुर्भाव हुआ जिसमें भवन को सुदृढ़ बनाने के लिए परम्परागत पद्धति पर ढलाईयों और अर्द्धस्तम्भों का प्रयोग न करके अलंकृत सतह तथा परतें युक्त प्रयोग में लायी गई हैं। उनको सुन्दर एवं आकर्षक मूर्तियों से अलंकृत किया गया है। संभव है कि मूर्तियों को प्रमुखता देने का उद्देश्य यह रहा है कि कुछ बुद्धि–जीवी उनकी कला की प्रशंसा करें तथा कला प्रेमी धार्मिक भवनों में सजीव देवी–देवताओं तथा लोक कथा आदि को सुगमतापूर्वक समझ सकें।

चित्र संख्या 12– विष्णु का वराह अवतार 11वीं–12वीं ई.

शिल्पियों ने केदारेश्वर मंदिर की विशाल पट्टिकाओं में वर्णात्मक कला का प्रदर्शन किया है। इन पट्टिकाओं पर हाथी, अश्वारोहित पुरूष, नवयौवन का श्रृंगार, संगीतकार, नाटकीय दृष्य, हंस आदि एवं विचित्र पशु–पक्षियों का तक्षण मंदिर के भित्तियों पर चारों दिशाओं में बनाये गये हैं। प्रस्तर के माध्यम से विविध कथाओं का चित्रण होयसल शिल्पियों की विशेषता है कि निर्जीव पत्थर में जैसे प्राण फूंक दिये हैं। वे मूक होकर भी मुखर हैं। फलस्वरूप ये मंदिर निर्माता अनायास ही कहानीकार बन गए हैं।

मंदिर की अलंकृत मूर्तियों के नीचे कुछ उकेरा हुआ सा प्रतीत होता है। जो वहाँ के लोगों की मान्यता है कि शायद वह उनके निर्माताओं के नाम अंकित किए गए होंगे और साथ ही साथ यह भी कहा जाता है कि वह देवलोक के कलाकार थे जिनमें चित्त को प्रसन्न करने की क्षमता थी, उनकी तुलना उस मधु मक्खी से की गई है, जो सरस्वती के चरणों के निकट कमल में निवास करती है।

चित्र संख्या 13– केदारेश्वर मंदिर का सामने का द्वार

चित्र संख्या 14– पट्टिकाओं पर अलंकृत विभिन्न पशुपक्षी

चित्र संख्या 15– मूर्तिशिल्पों के नीचे उनके कलाकारों के नाम

निष्कर्ष

मैं होयसल काल में बने केदारेश्वर मंदिर के मूर्तिशिल्पों का कलात्मक पक्ष व शैलीगत विश्लेषण कर मंदिर की कलात्मकता का आधुनिक युग में योगदान के आधार पर अध्ययन प्रस्तुत करने का प्रयत्न करूँगी। निसंदेहः देव लोक के कलाकार ही ऐसी रचना करने में सक्षम हो सकते थे, जो अतुल्य भारत में सत्यम्, शिवम्, सुन्दरम् है।

अंत टिप्पणी

1. *वासुदेव शरण अग्रवाल, भारतीय कला वाराणसी,1987 ।*
2. *रीता प्रताप, भारतीय चित्रकला एवं मूर्तिकला का इतिहास, जयपुर 2012 ।*
3. *नारायण पाण्डेय, भारतीय कला एवं पुरातत्व, प्राचय विद्याा इलाहाबाद 1926 ।*
4. *कृष्ण चन्द्र श्री वास्तव, प्राचीन भारत का इतिहास एवं संस्कृति, इलाहाबाद 2014 ।*
5. *www.flickr.com*
6. *printrest.com*
7. *www.gettyimages.com*